रिसाला नं.77

तक़्सीम मुफ़्त

Anmol Heere (Hindi)

अनमोल हीरे

- दिन का ए'लान 6
- जन्नत में भी अफ़्सोस ! 8
- अनमोल लम्हात की क़द्र 14
- वक़्त के क़द्रदानों के इर्शादात 14
- निज़ामुल अवक़ात की तरकीब बना लीजिये 17
- सुब्ह की फ़ज़ीलत 18
- सोने, जागने के 15 मदनी फूल 21

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अनमोल हीरे [1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (19 सफ़ह़ात) आप आख़िर तक ज़रूर पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत के बे शुमार मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 23 **सफ़ह़ा** 122 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अबुल मवाहिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते थे कि मैं ने ख़्वाब में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़ाअ़त करोगे ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं कैसे इस क़ाबिल हुवा ?'' इर्शाद फ़रमाया : ''इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर उस का सवाब मुझे नज़्र कर देते हो ।'' (الطبقاتُ الکُبریٰ لِلشَّعرانی ص ۱۰۱) सवाब नज़्र करने का त़रीक़ा येह है कि पढ़ते वक़्त सवाब नज़्र करने की दिल में निय्यत कर ले या पढ़ने से क़ब्ल या बा'द ज़बान से भी कह ले कि इस **दुरूद शरीफ़** का सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़्र करता हूं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।'' **मजलिसे मक्तबतुल मदीना**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

कहते हैं, एक **बादशाह** अपने मुसाह़िबों के साथ किसी बाग़ के क़रीब से गुज़र रहा था कि उस ने देखा बाग़ में से कोई शख़्स संगरेज़े (या'नी छोटे छोटे पथ्थर) फेंक रहा है, एक संगरेज़ा ख़ुद इस को भी आ कर लगा। उस ने ख़ुद्दाम को दौड़ाया कि जा कर संगरेज़े फेंकने वाले को पकड़ कर मेरे पास ह़ाज़िर करो, चुनान्चे ख़ुद्दाम ने एक गंवार को ह़ाज़िर कर दिया। **बादशाह** ने कहा : येह संगरेज़े तुम ने कहां से ह़ासिल किये ? उस ने डरते डरते कहा : मैं वीराने में सैर कर रहा था कि मेरी नज़र इन ख़ूब सूरत संगरेज़ों पर पड़ी, मैं ने इन को झोली में भर लिया, इस के बा'द फिरता फिराता इस बाग़ में आ निकला और फल तोड़ने के लिये येह संगरेज़े इस्ति'माल कर लिये। **बादशाह** ने कहा : तुम इन संगरेज़ों की क़ीमत जानते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं। **बादशाह** बोला : येह पथ्थर के टुकड़े दर अस्ल **अनमोल हीरे** थे, जिन्हें तुम नादानी के सबब ज़ाएअ़ कर चुके। इस पर वोह शख़्स अफ़्सोस करने लगा। मगर अब उस का अफ़्सोस करना बेकार था कि वोह **अनमोल हीरे** उस के हाथ से निकल चुके थे।

ज़िन्दगी के लम्ह़ात अनमोल हीरे हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ हमारी ज़िन्दगी के लम्ह़ात भी **अनमोल हीरे** हैं अगर इन को हम ने बेकार ज़ाएअ़ कर दिया तो ह़स्रतो नदामत के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई लाज आई न ज़र्रों की हंसी से

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को एक मुक़र्ररा वक़्त के लिये ख़ास

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

मक़्सद के तहूत इस दुन्या में भेजा है। चुनान्चे पारह 18 **सूरतुल मुअमिनून** आयत नम्बर 115 में इर्शाद होता है :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।

''ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान'' में इस आयते मुक़द्दसा के तहूत लिखा है : और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं बल्कि तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इ़बादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हे तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें।

मौत व ह़यात की पैदाइश का सबब बयान करते हुए पारह 29 **सूरतुल मुल्क** आयत नम्बर 2 में इर्शाद होता है :

الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।

ज़िन्दगी का वक़्त थोड़ा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा दो[2] आयात के इ़लावा भी क़ुरआने पाक में दीगर मक़ामात पर तख़्लीक़े इन्सानी या'नी इन्सान की पैदाइश का मक़्सद बयान किया गया है। इन्सान को इस दुन्या में बहुत मुख़्तसर से वक़्त के लिये रहना है और इस वक़्फ़े में इसे क़ब्रो ह़श्र के

त़वील तरीन मुआ़मलात के लिये तय्यारी करनी है लिहाज़ा इन्सान का वक़्त बेह़द क़ीमती है। वक़्त एक तेज़ रफ़्तार गाड़ी की त़रह़ फ़र्राटे भरता हुवा जा रहा है न रोके रुकता है न पकड़ने से हाथ आता है, जो सांस एक बार ले लिया वोह पलट कर नहीं आता। चुनान्चे

सांस की माला

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सने बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जल्दी करो ! जल्दी करो ! तुम्हारी ज़िन्दगी क्या है ? येही सांस तो हैं कि अगर रुक जाएं तो तुम्हारे उन आ'माल का सिल्सिला भी मुन्क़त़ेअ़ हो जाए जिन से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करते हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जिस ने अपना जाएज़ा लिया और अपने गुनाहों पर चन्द आंसू बहाए। येह कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पारह 16 **सूरए मरयम** की आयत नम्बर 84 तिलावत फ़रमाई : اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۴﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम तो इन की गिनती पूरी करते हैं।

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : यहां गिनती से सांसों की गिनती मुराद है। (اِحیاءُ الْعُلُوم ج٤ ص ٢٠٥ دارصادر بیروت)

येह सांस की माला अब बस टूटने वाली है

ग़फ़्लत से मगर दिल क्यूं बेदार नहीं होता

"दिन" का ए'लान

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "शुअ़बुल ईमान"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

में नक़्ल करते हैं : ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : रोज़ाना सुब्ह़ जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उस वक़्त ''दिन'' येह ए'लान करता है : अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि आज के बा'द मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा।

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ ص۳۸٦ حدیث ۳۸٤٠ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं

जनाब या मर्ह़ूम !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का जो दिन नसीब हो गया उसी को ग़नीमत जान कर जितना हो सके उस में अच्छे अच्छे काम कर लिये जाएं तो बेहतर है कि ''कल'' न जाने हमें लोग ''जनाब'' कह कर पुकारते हैं या ''मर्ह़ूम'' कह कर। हमें इस बात का एह़सास हो या न हो मगर येह ह़क़ीक़त है कि हम अपनी मौत की मन्ज़िल की त़रफ़ निहायत तेज़ी के साथ रवां दवां हैं। चुनान्चे पारह 30 **सूरए इन्शिक़ाक़** की आयत नम्बर 6 में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदमी ! बेशक तुझे अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ ज़रूर दौड़ना है फिर उस से मिलना।

मरते जाते हैं हज़ारों आदमी

आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है

अचानक मौत आ जाती है

अपने वक़्त को फ़ुज़ूलियात में बरबाद करने वालो ! ग़ौर करो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ज़िन्दगी किस क़दर तेज़ रफ़्तारी के साथ गुज़रती जा रही है। बारहा आप ने देखा होगा कि अच्छा भला डीलडोल वाला इन्सान अचानक मौत के घाट उतर जाता है, अब **क़ब्र** में उस पर क्या बीत रही है इस का अन्दाज़ा हम नहीं कर सकते अलबत्ता ख़ुद उस पर ज़िन्दगी का ह़ाल खुल चुका होगा कि :

कितनी बे ए'तिबार है दुन्या मौत का इन्तिज़ार है दुन्या
गर्चे ज़ाहिर में सूरते गुल है पर ह़क़ीक़त में ख़ार है दुन्या

ऐ दुन्या के माल के मतवालो ! जम्अ़ माल ही को अपनी ज़िन्दगी का मक़्सदे वह़ीद समझने वालो ! जल्दी जल्दी अपनी आख़िरत की तय्यारी कर लो। कहीं ऐसा न हो कि रात भले चंगे सोने के बा वुजूद सुब्ह़ तुम्हें अंधेरी क़ब्र में डाल दिया जाए। **लिल्लाह !** ग़फ़्लत की नींद से बेदार हो जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 17 **सूरतुल अम्बियाअ** की पहली आयत में इर्शाद फ़रमाता है :

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَ هُمْ فِیْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : लोगों का ह़िसाब नज़्दीक और वोह ग़फ़्लत में मुंह फेरे हैं।

एक झोंके में है इधर से उधर
चार[4] दिन की बहार है दुन्या

अहले जन्नत का भी अफ़्सोस !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपने वक़्त की क़द्र पहचाननी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

ज़रूरी है, फ़ालतू वक़्त गुज़रना कितने बड़े नुक़्सान की बात है वोह इस ह़दीसे मुबारक से समझिये चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''अहले जन्नत को किसी चीज़ का भी अफ़्सोस नहीं होगा सिवाए उस साअ़त (या'नी घड़ी) के जो (दुन्या में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के बिग़ैर गुज़र गई ।''

(شُعَبُ الْاِيْمَان ج۳ ص۳۸٦ حدیث ۳۸٤۰ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

क़लम का क़त़

ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर ''तब्यीनु कज़िबिल मुफ़्तरी'' में फ़रमाते हैं : (पांचवीं सदी के मश्हूर बुज़ुर्ग) ह़ज़रते सय्यिदुना सलीम राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़लम जब लिखते लिखते घिस जाता तो क़त़ लगाते (या'नी नोक तराशते) हुए (अगर्चे दीनी तह़रीर के लिये येह भी सवाब का काम है मगर एक पन्थ दो काज के मिस्दाक़) **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर देते ताकि येह वक़्त सिर्फ़ क़त़ लगाते हुए ही सर्फ़ न हो !

जन्नत में दरख़्त लगवाइये !

वक़्त की **अहम्मिय्यत** का इस बात से अन्दाज़ा लगाइये कि अगर आप चाहें तो इस दुन्या में रहते हुए सिर्फ़ एक सेकन्ड में जन्नत के अन्दर एक दरख़्त लगवा सकते हैं और जन्नत में दरख़्त लगवाने का त़रीक़ा भी निहायत ही आसान है चुनान्चे ''इब्ने माजह शरीफ़'' की एक ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा । वोह कलिमात येह हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ﴿4﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ﴿3﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰه ﴿2﴾ سُبْحٰنَ اللّٰه ﴿1﴾

(سُنَن ابن ماجه ج٤ ص٢٥٢ حديث ٣٨٠٧ دار المعرفة بيروت)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जन्नत में दरख़्त लगवाना किस क़दर आसान है ! अगर बयान कर्दा चारों कलिमात में से एक कलिमा कहें तो एक और अगर चारों कह लेंगे तो जन्नत में चार दरख़्त लग जाएंगे । अब आप ही ग़ौर फ़रमाइये कि वक़्त कितना क़ीमती है कि ज़बान को मा'मूली सी ह़रकत देने से जन्नत में दरख़्त लग जाते हैं तो ऐ काश ! फ़ालतू बातों की जगह سُبْحٰنَ اللّٰه का विर्द कर के हम जन्नत में बे शुमार दरख़्त लगवा लिया करें । हम चाहे खड़े हों, चल रहे हों, बैठे हों या लैटे हों या कोई कामकाज कर रहे हों हमारी कोशिश येही होनी चाहिये कि हम दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें कि इस के सवाब की कोई इन्तिहा नहीं सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस[10] रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस[10] गुनाह मिटाता है, दस[10] दरजात बुलन्द फ़रमाता है ।

(سُنَنُ النَّسَائی ص٢٢٢ حديث ١٢٩٤ دار الكتب العلمية بيروت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

याद रहे ! जब भी लैटे लैटे कोई विर्द करें तो पाउं समेट लेना चाहिये ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! बोलने से पहले इस त़रह़ तोलने की आ़दत पड़ जाए कि येह बात जो मैं करना चाहता हूं इस में कोई

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

दीनी या दुन्यवी फ़ाएदा भी है या नहीं ? अगर येह बात फ़ुज़ूल महसूस हो तो बोलने के बजाए ''दुरूद शरीफ़'' पढ़ना या ''**अल्लाह अल्लाह**'' कहना नसीब हो जाए ताकि ढेरों सवाब हाथ आए। या سُبْحٰنَ اللّٰه या اَلْحَمْدُ لِلّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर जन्नत में दरख़्त लगवाने की सआ़दत मिल जाया करे।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

साठ साल की इबादत से बेहतर

अगर कुछ पढ़ने के बजाए ख़ामोश रहने को जी चाहे तो इस में भी सवाब कमाने की सूरतें हैं और वोह येह कि उलटे सीधे ख़यालात में पड़ने के बजाए आदमी यादे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ या यादे मदीना व शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में गुम हो जाए। या इ़ल्मे दीन में ग़ौरो तफ़क्कुर शुरूअ़ कर दे या मौत के झटकों, क़ब्र की तन्हाइयों, इस की वहूशतों और महशर की होलनाकियों की सोच में डूब जाए तो इस त़रह़ भी वक़्त ज़ाएअ़ नहीं होगा बल्कि एक एक सांस اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इबादत में शुमार होगा। चुनान्चे ''जामेए़ सग़ीर'' में है : **सरकारे मदीना**, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : (उमूरे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़) घड़ी भर के लिये **ग़ौरो फ़िक्र** करना **60** साल की इ़बादत से बेहतर है।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر لِلسُّيُوْطِيّ ،ص ۳۶۵ حدیث ۵۸۹۷ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

उन की यादों में खो जाइये *मुस्तफ़ा मुस्तफ़ा कीजिये*

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

पांच[5] को पांच[5] से पहले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ज़िन्दगी बेहद मुख़्तसर है, जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आयिन्दा वक़्त मिलने की उम्मीद धोका है। क्या मा'लूम आयिन्दा लम्हे हम मौत से हम आग़ोश हो चुके हों। रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

اِغْتَنِمْ خَمْساً قَبْلَ خَمْسٍ: شَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ وَصِحَّتَكَ قَبْلَ سَقَمِكَ وَغِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ وَحَيَاتَكَ قَبْلَ مَوْتِكَ

तरजमा : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह्हत को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़ुरसत को मश्ग़ूलिय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले।

(اَلْمُسْتَدْرَك ج٥ ص٤٣٥ حدیث ٧٩١٦ دارالمعرفة بیروت)

ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल येह देता है मुनादी

क़ुदरत ने घड़ी उ़म्र की इक और घटा दी

दो ने'मतें

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे फ़ैज़ बुन्याद है : दो[2] ने'मतें ऐसी हैं जिन के बारे में बहुत से लोग धोके में हैं, एक सिह्हत और दूसरी फ़राग़त।

(صَحِيحُ البُخارِيّ ج٤ ص٢٢٢ حدیث ٦٤١٢ دارالکتب العلمیة بیروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सिह्ह़त की क़द्र बीमार ही कर सकता है और वक़्त की क़द्र वोह लोग जानते हैं जो बेह़द मसरूफ़ होते हैं वरना जो लोग ''फ़ुरसती'' होते हैं उन को क्या मा'लूम कि वक़्त की क्या अहम्मिय्यत है ! वक़्त की क़द्र पैदा कीजिये और फ़ुज़ूल बातों, फ़ुज़ूल कामों, फ़ुज़ूल दोस्तियों से गुरेज़ करने का ज़ेह्न बनाइये।

हुस्ने इस्लाम

तिरमिज़ी शरीफ़ में है : सरकारे दो[2] आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : इन्सान के इस्लाम की ख़ूबियों में से एक (ख़ूबी) छोड़ देना है उस (अम्र) का जो इसे नफ़्अ़ न दे।

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج٤ ص١٤٢ حدیث ٢٣٤٤ دارالفکر بیروت)

अनमोल लम्ह़ात की क़द्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी के अय्याम चन्द घन्टों से और घन्टे लम्ह़ों से इ़बारत हैं, ज़िन्दगी का हर सांस **अनमोल हीरा** है, काश ! एक एक सांस की क़द्र नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ाएदा न गुज़र जाए और कल बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा कर अश्के नदामत न बहाने पड़ जाएं ! सद करोड़ काश ! एक एक लम्ह़े का ह़िसाब करने की आ़दत पड़ जाए कि कहां बसर हो रहा है, ज़ह़े मुक़द्दर ! ज़िन्दगी की हर हर साअ़त मुफ़ीद कामों ही में सर्फ़ हो। बरोज़े क़ियामत अवक़ात को फ़ुज़ूल बातों, ख़ुश गप्पियों में गुज़रा हुवा पा कर कहीं कफ़े अफ़्सोस मलते न रह जाएं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

वक़्त के क़द्रदानों के इर्शादात व मन्क़ूलात

﴾1﴿ **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ''येह अय्याम तुम्हारी ज़िन्दगी के सफ़ह़ात हैं इन को अच्छे आ'माल से ज़ीनत बख़्शो ।''

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ''मैं अपनी ज़िन्दगी के गुज़रे हुए उस दिन के मुक़ाबले में किसी चीज़ पर नादिम नहीं होता जो दिन मेरा नेक आ'माल में इज़ाफ़े से ख़ाली हो ।''

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : रोज़ाना तुम्हारी उ़म्र मुसल्सल कम होती जा रही है तो फिर नेकियों में क्यूं सुस्ती करते हो ? एक मर्तबा किसी ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ''येह काम आप कल पर मुअख़्ख़र कर दीजिये ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''मैं रोज़ाना का काम एक दिन में ब मुश्किल मुकम्मल कर पाता हूं अगर आज का काम भी कल पर छोड़ दूंगा तो फिर दो दिन का काम एक दिन में क्यूंकर कर सकूंगा ?''

आज का काम कल पर मत डालो कल दूसरा काम होगा

﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं । ऐ आदमी ! तू अय्याम ही का मज्मूआ़ है, जब एक रोज़ गुज़र जाए तो यूं समझ कि तेरी ज़िन्दगी का एक ह़िस्सा भी गुज़र गया ।

(الطبقات الکبری للمناوی ج٦ ص٢٥٩ دار صادر بیروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं एक मुद्दत तक अहलुल्लाह की सोह़बत से फ़ैज़याब रहा उन की सोह़बत से मुझे दो अहम बातें सीखने को मिलीं। (1) वक़्त तलवार की त़रह़ है तुम इस को (नेक आ'माल के ज़रीए) काटो वरना (फ़ुज़ूलियात में मश्ग़ूल कर के) येह तुम को काट देगा (2) अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करो अगर तुम ने इस को अच्छे काम में मश्ग़ूल न रखा तो येह तुम को किसी बुरे काम में मश्ग़ूल कर देगा।

﴾6﴿ इमाम राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! खाना खाते वक़्त इल्मी मश्ग़ला (तह़रीरी या मुत़ालआ़) तर्क हो जाने का मुझे बहुत अफ़्सोस होता है कि वक़्त निहायत ही क़ीमती दौलत है।''

अ़जब चीज़ एह़सास है ज़िन्दगी का

﴾7﴿ आठवीं सदी के मश्हूर शाफ़ेई आ़लिम सय्यिदुना शम्सुद्दीन अस्बहानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के बारे में ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ख़ौफ़ से खाना कम तनावुल फ़रमाते थे कि ज़ियादा खाने से बौलो बराज़ की ज़रूरत बढ़ेगी और बार बार बैतुल ख़ला जा कर वक़्त सर्फ़ होगा !

(الدرر الکامنة للعسقلانی ج٤ ص٣٢٨ داراحیاء التراث العربی بیروت)

﴾8﴿ ह़ज़रते अ़ल्लामा ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ''**तज़्किरतुल हुफ़्फ़ाज़**'' में ख़त़ीबे बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی के बारे में तह़रीर फ़रमाते हैं :

''आप राह चलते भी मुत़ालआ़ जारी रखते।'' (ताकि आने जाने का वक़्त बेकार न गुज़रे) (تذكرة الحفاظ ج٣ ص٢٢٤ دارالكتب العلمية بيروت)

﴿9﴾ **ह़ज़रते** जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى वक़्ते नज़्अ़ क़ुरआने पाक पढ़ रहे थे, उन से इस्तिफ़्सार किया गया : इस वक़्त में भी तिलावत ? इर्शाद फ़रमाया : मेरा नामए आ'माल लपेटा जा रहा है तो जल्दी जल्दी इस में इज़ाफ़ा कर रहा हूं।

(صيد الخاطر لابن الجوزى ص٢٢٧ مكتبه نزار مصطفى الباز)

निज़ामुल अवक़ात की तरकीब बना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो अपना यौमिय्या निज़ामुल अवक़ात तरतीब दे लेना चाहिये। अव्वलन इ़शा की नमाज़ पढ़ कर ह़त्तल इम्कान दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। रात को फ़ुज़ूल चोपाल लगाना, होटलों की रौनक़ बढ़ाना और दोस्तों की मजलिसों में वक़्त गंवाना (जब कि कोई दीनी मस्लह़त न हो) बहुत बड़ा नुक़्सान है। **तफ़्सीरे रूहुल बयान** जिल्द 4 सफ़ह़ा नम्बर 166 पर है : **''क़ौमे लूत़ की तबाह कारियों में से येह भी था कि वोह चौराहों पर बैठ कर लोगों से ठट्ठा मस्ख़री करते थे।''** प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से लरज़ उठिये ! दोस्त ब ज़ाहिर कैसे ही नेक सूरत हों उन की दिल आज़ार और ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर देने वाली मह़फ़िलों से तौबा कर लीजिये। रात को दीनी मशाग़िल से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाइये कि रात का आराम दिन के आराम के मुक़ाबले में ज़ियादा सिह़्ह़त बख़्श है

और ऐन फ़ित़रत का तक़ाज़ा भी। चुनान्चे पारह 20 **सूरतुल क़सस** आयत नम्बर 73 में इर्शाद होता है :

وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस ने अपनी मेहर (रह़मत) से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल ढूंडो (या'नी कस्बे मआ़श करो) और इस लिये कि तुम ह़क़ मानो।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "नूरुल इ़रफ़ान" सफ़ह़ा 629 पर इस के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि कमाई के लिये दिन और आराम के लिये रात मुक़र्रर करनी बेहतर है। रात को बिला वज्ह न जागे, दिन में बेकार न रहे अगर मा'ज़ूरी (मजबूरी) की वज्ह से दिन में सोए और रात को कमाए तो ह़रज नहीं जैसे रात की नोकरियों वाले मुलाज़िम वग़ैरा।

सुब्ह़ की फ़ज़ीलत

निज़ामुल अवक़ात मुतअ़य्यन करते हुए काम की नौइ़य्यत और कैफ़िय्यत को पेशे नज़र रखना मुनासिब है। मसलन जो इस्लामी भाई रात को जल्दी सो जाते हैं सुब्ह़ के वक़्त वोह तरो ताज़ा होते हैं। लिहाज़ा इ़ल्मी मशाग़िल के लिये सुब्ह़ का वक़्त बहुत मुनासिब है। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह दुआ "तिरमिज़ी" ने नक़्ल की है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत के लिये सुब्ह़ के अवक़ात में बरकत अ़ता फ़रमा।" (ترمذی ج۳ ص۶ حدیث ۱۲۱۶) चुनान्चे **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत**

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी (**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) मेरी उम्मत के तमाम उन दीनी व दुन्यावी कामों में बरकत दे जो वोह सुब्ह़ सवेरे किया करें। जैसे सफ़र, त़लबे इ़ल्म, तिजारत वग़ैरा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 491)

कोशिश कीजिये कि सुब्ह़ उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक सारे कामों के अवक़ात मुक़र्रर हों मसलन इतने बजे तहज्जुद, इ़ल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र (इसी त़रह़ दीगर नमाज़ें भी) इश्राक़, चाश्त, नाश्ता, कस्बे मआ़श, दो पहर का खाना, घरेलू मुआ़मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोह़बत, (अगर येह मुयस्सर न हो तो तन्हाई ब दरजहा बेहतर है), इस्लामी भाइयों से दीनी ज़रूरिय्यात के तह़्त मुलाक़ात, वग़ैरा के अवक़ात मुतअ़य्यन कर लिये जाएं, जो इस के आ़दी नहीं हैं उन के लिये हो सकता है शुरूअ़ में कुछ दुश्वारी पेश आए। फिर जब आ़दत पड़ जाएगी तो इस की बरकतें भी ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाएंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

दिन लह्व में खोना तुझे शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं
रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया फ़रमाने ह़क़ टाला किया
शुक्रे करम तर्से सज़ा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج۱ ص۵۵ حديث ۱۷۵ دارالكتب العلمية بيروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"काश ! जन्नतुल बक़ीअ़ मिले" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से सोने, जागने के 15 मदनी फूल

﴾1﴿ सोने से पहले बिस्तर को अच्छी त़रह़ झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए ﴾2﴿ सोने से पहले येह दुआ पढ़ लीजिये : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) (بخاری ج٤ص١٩٦ حديث ٦٣٢٥) ﴾3﴿ **अ़स्र के बा'द न सोएं अ़क़्ल ज़ाइल होने का ख़ौफ़ है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे।" (مُسند ابی یعلی حدیث ٤٨٩٧ ج٤ص٢٧٨) ﴾4﴿ दो पहर को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

क़ैलूला (या'नी कुछ देर लैटना) मुस्तहब है । (عالمگیری ج ٥ ص ٣٧٦) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी करते हैं, रात में नमाज़ें पढ़ते ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ करते हैं या कुतुब बीनी या मुत़ालए़ में मश्ग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान हुई क़ैलूला से दफ़्अ़ हो जाएगी । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 79, मक्तबतुल मदीना) ﴾5﴿ दिन के इब्तिदाई ह़िस्से में सोना या मग़रिब व इ़शा के दरमियान में सोना मक्रूह है । (عالمگیری ج ٥ ص ٣٧٦) ﴾6﴿ सोने में मुस्तहब येह है कि बा त़हारत सोए और ﴾7﴿ कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर **(اَیضاً)** ﴾8﴿ सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा ﴾9﴿ सोते वक़्त यादे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो, तह्लील व तस्बीह़ व तह़मीद पढ़े (या'नी سُبْحٰنَ اللهِ ,لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ और اَلْحَمْدُ لِلّٰه का विर्द करता रहे) यहां तक कि सो जाए, कि जिस ह़ालत पर सोता है उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा **(اَیضاً)** ﴾10﴿ जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ (بخاری ج٤ص١٩٦ حدیث ٦٣٢٥)

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ﴾11﴿ उसी वक़्त इस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

का पक्का इरादा करे कि परहेज़ गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नहीं। (فتاوٰی عالمگیری ج۵ص۳۷۶) ﴿12﴾ जब लड़के और लड़की की उ़म्र दस साल की हो जाए तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उ़म्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उ़म्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए (نُزْهَةُ الْمُحتار، رَدُّالْمُحتار ج۹ص۶۲۹) ﴿13﴾ मियां बीवी जब एक चारपाई पर सोएं तो दस बरस के बच्चे को अपने साथ न सुलाएं, लड़का जब ह़द्दे शह्वत को पहुंच जाए तो वोह मर्द के हुक्म में है (نُزْهَةُ المُحتار ج۹ص۶۳۰) ﴿14﴾ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ﴿15﴾ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये तो बड़ी सआ़दत है। सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।" (صَحِيح مُسلِم،ص۵۹۱ حديث۱۱۶۳)

त़रह़ त़रह़ की सेंकड़ों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो *लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो*

होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो *पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ◈ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ◈ रोज़ाना जाएज़ा लेते हुए नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه " अपनी इस्लाह़ के लिये **"नेक आ'माल"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه